2020-0

BHAKTI SAHITYA KI PRASANGIKATA

ISBN 978-93-83813-51-3

Publisher : Soumya Prakashan
Mahabaleshawar Colony Darga Road
Vijayapur– 586 103 (Karnataka)

© Publisher

First Edition : 2020
Copies : 1000
Pages : xii + 312 = 324
Price : **Rs. 300/-**
Book Size : Demy 1/8
Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल
संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-51-3

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
महाबलेश्वर कॉलनी, दर्गा रोड
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

प्रथम मुद्रण : 2020

© प्रकाशक

प्रति : 1000
पृष्ट : xii + 312 = 324
मूल्य : रु. 300/-
बुक साईज : डेमी 1/8
पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
विठ्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com
Mobile : 8884495331, 9448223602

बी.एल.डी.इ. संस्था
बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
बसवनबागेवाडी के हिन्दी प्राध्यापक
स्व. एम्. एच्. राठोड जी को
समर्पित

सन्त साहित्य के सामाजिक आदर्श और आधुनिक संवेदना

• श्रीमती एम.एन.होम्बाली

सन्त साहित्य भारतीय चिंतन की विभिन्न विचार - सरणियों का अपूर्व समुच्चय है। सन्तों ने अपनी चतुर्दिक फैली हुई भाव-सामग्री ग्रहण कर, सन्त मन के मधु कोष का निर्माण किया है। स्वानुभूति व सहजावस्था ही उनके जीवन-दर्शन का मुख्य आधार है। जिस युग में इन्होंने काव्य रचना की वह भारत के लिए अज्ञान, अशिक्षा और अनैतिकता का अंधकारमय युग था और ये कवि अपने युग की जनता के निम्न स्तर से सम्बन्धित थे, फिर भी इन्होंने ज्ञान की जो ज्योति प्रज्वलित की, वह अद्भूत एवं अपूर्व है।

अतः स्पष्ट है कि सन्तों की शाश्वत वाणी का महत्व मध्ययुग में ही नहीं, भारतीय संस्कृति के लिए हर युग में रहेगा। आधुनिक युग के महान विचारकों ने भी सन्तों के इस महत्व को समझा था। सन्तों के राम-रहीम और केशव-करीम की भांति महात्मा गाँधी ने भी ईश्वरअल्लाह को एक ही समझा। उनका प्रिय भजन ईश्वर-इल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान सन्तवाणी की परंपरा में ही आता है। डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं - सन्त काव्य साधना में तत्पर एवं सर्वजन की मंगलकामना करने वाले भक्तों के सरल हृदयों की सहज अनुभूति का चित्रण मात्र है। यह वह प्रकाश स्तंभ है जो, निराशा, वासना, प्रतिशोध और प्रतिहिंसा के अंधकार में भटकते हुए मानव समाज को शताब्दियों से प्रकाश दे रहा है और भविष्य में भी मार्ग प्रदर्शित करता रहेगा। मानव मानव के मध्य जब मानवता का अतीत लोप हो चला था, मानवीय सवृत्तियाँ - प्रेम, क्षमा, करुणा, शील, सेवा, विनय, त्याग एवं अहिंसादि चिरंतन मूल्य जब लुप्तप्रायः होते हुए, ऐसे संक्रांति युग में मध्यकालीन सन्तों ने भक्ति की जो भागीरथी प्रवहित की,

उसने मानव में मानवता का संचार किया। जो मानव-धर्म जाति, वर्ग, सम्प्रदाय आदि के प्रखण्डों में विभक्त हो चला था, उसमें निर्गुण भक्तिधारा प्रवाहित कर, रहस्यवाद एवं भक्तिवाद के राम-नामामृत में डुबोकर विच्छिन्न मानव समुदाय में भावनात्मक एकत्व का मृदु संचार किया। निराकार ब्रह्म के प्रतीक रूप में धर्म, नीति, मानवता, मर्यादा, सत्य, शील, सदाचार, एवं लोक-कल्याणपरक दिव्य मानवीय सद्गुणों का समारोहपूर्ण समावेश करके जनमानस में अपूर्व शक्ति, शील एवं सौन्दर्यपरक आदर्श बना दिए।

संत साहित्य में हम दो प्रकार की अभिव्यक्तियाँ स्पष्टतः देख सकते हैं। एक है - आध्यात्मिक अभिव्यक्ति और दूसरी है - सामाजिक। एक लोक जीवन से जुडी हुई अभिव्यक्ति। डॉ. वासुदेव सिंह के अनुसार व्यापक अर्थ में सन्त का तात्पर्य है - पवित्रता, परोपकार तथा सदाचरण। आज भले ही हमने आधुनिकता का मुखौटा ओढ रखा हो किंतु हमारी अवस्था मध्ययुग से भी बदतर है। आज का औसत मनुष्य शंका, उलझन, विषमता-बोध, असंगति तथा अनिश्चय की मानसिकता से ग्रसित है। पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण, वैज्ञानिकता, अतिबौद्धिकता, नगरीकरण, बढती हुई आबादी, फिल्मों के दुष्परिणाम आदि के कारण मानवीय जीवन मौल्य टूटने लगे हैं और उनमें परिवर्तन होने लगा है। आदमी स्वार्थी हो गया है। वैयक्तिकता, निराशा, कुंठा, अनास्था, घुटन, विद्रोही भावना उसमें छा गई है। नजदीक के रिश्तों को भी वह भूल गया है। बौद्धिकता का महत्व इतना बढ रहा है कि मानवीय भावनाओं को वह निगल गई। संत साहित्य उतना ही प्राचीन है, जितनी प्राचीन मनुष्य के हृदय की उपासना प्रवृत्ति है। सन्त कवियों ने अपने विचारों में निहित सत्य को शाश्वत एवं विश्वजनीन मानते हुए उन्हें दूसरों के हितार्थ प्रकट करना चाहा।

■■

सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, पी.पी.जी. कला महाविद्यालय, गदग